

शंकर का द्वैत-वेदान्त
अथवा विचार

B.A I Hony

I Paper

Page No.

Date

18/5/20

आर्य समाज में सर्वोच्च विचार वेदान्त है। प्राचीन काल में वेदान्त शब्द का उपयोग उपनिषद् के लिए किया जाता था क्योंकि उपनिषद् वेद की अन्तिम कड़ी है। परन्तु आगे चलकर सभी उपनिषद् को वेदान्त माना जाने लगा।

वेदान्त दर्शन का आधार वादराज्य द्वैतरसिद्धि अथवा द्वैत को माना जाता है। अन्तःस्वतन्त्र को अन्तःस्वतन्त्र के प्रकार माना है। अन्तःस्वतन्त्र शरीरि अन्तःस्वतन्त्र भीमांसा एवं अन्तःस्वतन्त्र भीमांसा। वेदान्त दर्शन के मुख्य मत सम्प्रदाय हैं (1) अद्वैतवाद (2) विशिष्टाद्वैतवाद (3) द्वैतवाद (4) द्वैताद्वैतवाद (5) जीव और अन्तःस्वतन्त्र के बीच 'सात्म्य' है। वेदान्त दर्शन का मुख्य पक्ष है। शंकर के अनुसार जीव और अन्तःस्वतन्त्र अद्वैत है। अन्तःस्वतन्त्र वेदान्त है। शंकर का दर्शन अन्तःस्वतन्त्र पर अद्वैत कहलाता है। शंकर एक तत्त्ववादी है। उन्होंने अन्तःस्वतन्त्र को ही एक मात्र परमात्मा माना है। शंकर ने अन्तःस्वतन्त्र परमात्मा द्वैत को ही मुख्य माना है। अन्तःस्वतन्त्र को स्वतन्त्र प्रकार माना है। अन्तःस्वतन्त्र आत्मा एवं अन्तःस्वतन्त्र है। अन्तःस्वतन्त्र अन्तःस्वतन्त्र परमात्मा है। सभी विषयों का आधार है। अन्तःस्वतन्त्र अन्तःस्वतन्त्र से परमात्मा है। अन्तःस्वतन्त्र अन्तःस्वतन्त्र है एवं अन्तःस्वतन्त्र से उत्पन्न है।

अन्तःस्वतन्त्र अद्वैत है। अन्तःस्वतन्त्र को ही एक मात्र सत्य माना है। अन्तःस्वतन्त्र को द्वैत कहेंगे सत्य सत्य नहीं है। शंकर ने अन्तःस्वतन्त्र को निर्गुण कहा है। उपनिषद् के

शंकर का द्वाय-वेदान्त
अथवा निवृत्ति

B.A. II Hons

I Paper

Page No.

Date

Page No.

Date

भारतीय दर्शनों में सर्वप्रथम निवृत्ति का उद्घोष
है। प्राचीन काल में वेदान्तवाद का उद्घोष उपनिषदों
के लिए किया जाता था जो कि उपनिषदों के ही
अन्तिम स्तर है। परन्तु आगे चलकर भी उपनिषदों के
वेदान्त को नहीं माना गया।

वेदान्त दर्शन का आधार वादराज्य द्वंद्वविम
वाक्यबुद्धि को माना जाता है। इसका अर्थ है कि ज्ञान
के प्रकारों का अर्थ है ज्ञान-वेदान्त प्रत्यक्ष, शरीरि, शरीरि
मीमांसा एवं अन्तर मीमांसा। वेदान्त दर्शन के मुख्य
मार्गसंग्रह है (1) अद्वैतवाद (2) विशिष्टाद्वैतवाद
(3) द्वैतवाद (4) द्वैतवाद द्वैतवाद
और और इसमें तीन हैं 'सांख्यिक' है भी वेदान्त दर्शन
का मुख्य पक्ष है। शंकर के अनुसार जीव और प्रकृति
अद्वैत हैं। अर्थात् वेदान्तों एक है शंकर का दर्शन अद्वैत
आधार पर अद्वैत कहलाता है। शंकर एक तत्त्व वादी है
उन्होंने प्रकृति को ही एक मात्र परमात्मा माना है।
शंकर ने प्रकृति को पारमार्थिक दृष्टि को ही माना है। प्रकृति
एक ही प्रकृति को स्वयं प्रकाश कहा जाता है। प्रकृति
आत्मिक एवं विज्ञान है। प्रकृति विज्ञान वाद, विज्ञान
परमार्थिक है। सभी विषयों का आधार है प्रकृति
देश, काल निमित्त से प्रकृति-मात्र है। प्रकृति कालाती
है एवं कर्म कारण है उपर्युक्त है।

प्रकृति एक तत्त्व वादी है प्रकृति को ही एक मात्र सत्य
माना है। प्रकृति को ही एक मात्र सत्य माना है।
शंकर ने प्रकृति को निर्गुण कहा है। उपनिषदों के